भावपूर्ण
कविताओं का
अभूतपूर्व संग्रह
जन्म-मरण के बन्धन से
उस दिन मुक्ति देना ईश्वर!
पर-नयनों के अश्रु से
जिस दिन द्रवित न होने पाऊं
भाव सुमन
एक आधुनिक
काव्यसुधा सरस
वागीश अपरिचित
मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए
जब भी मैं धरा पर आऊं

भाव सुमन

एक आधुनिक काव्यसुधा सरस

लेखक: **वागीश अपरिचित**

पुस्तिका परिचय

इस लघु पुस्तिका में हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए भौतिक और आध्यात्मिक पहलुओं को सुन्दर, स्मरणीय, और कर्णप्रिय कविताओं के रूप में छुआ गया है। ये कवितायेँ बहुआयामी हैं। प्रत्येक कविता अनेक प्रकार के विषयों को एकसाथ छूती है। कविता हमारे अवचेतन मन तक आसानी से पहुँच बना लेती हैं। इसीलिए कहा जाता है कि "जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि"। बहुत सी पुस्तकों को पढ़ने से भी जो बात मन-स्वभाव में न बैठे, वह मात्र एक कविता के पठन-चिंतन से आसानी से बैठ सकती है। इस पुस्तिका की सभी कविताएँ स्मरण करने योग्य हैं। इन्हें गाया भी जा सकता है। हरेक कविता भाव व अनुभव से भरी हुई है। इन कविताओं को सजावट के तौर पर भी विभिन्न स्थानों पर लगाया जा सकता है। पॉकेट बुक के रूप में इन्हें हमेशा अपने साथ भी रखा जा सकता है , ताकि इनकी चेतनामयी शक्ति किसी तंत्रमंडल की तरह हर समय लाभ प्रदान करती रहे। बहुत न लिखते हुए इसी आशा के साथ विराम लगाता हूँ कि प्रस्तुत कविता-संग्रह कविता-प्रेमी पाठकों की आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा।

भाव सुमन

कवि विनोद शर्मा एक हरफनमौला व्यक्ति हैं, और साथ में एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी भी हैं। इन्होंने इस पुस्तिका के लेखक को कविता से सम्बंधित बहुत सी तकनीकी जानकारियां प्रदान की हैं। ये हिमाचल प्रदेश के सोलन जिला में अध्यापन के क्षेत्र से जुड़े हैं। सोलन पहाड़ों का प्रवेष-द्वार भी कहलाता है। यह हिमालयी उतुंग शिखरों को आधुनिक रूप से विकसित मैदानी भूभागों से जोड़ता है। विनोद भाई कला, संगीत व साहित्य के क्षेत्रों में बहुत रुचि रखते हैं। रंग-बिरंगी कविताएँ तो इनके दिल की आवाज की तरह हैं , जो बरबस ही इनके मुख से निस्सृत होती रहती हैं। ये सोलन जिला के एक छोटे से हिमशिखराँचलशायी गाँव से सम्बन्ध रखते हैं। इनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ही अध्यापन के क्षेत्र से जुड़ी हुई है। इनकी कविताएँ वास्तविकता का परिचय करवाते हुए अनायास ही दिल को छूने वाली होती हैं। आशा है कि ये भविष्य में भी अपने देहजगत के अमृतकुंड से झरने वाले कवितामृत से अंधी भौतिकता के जहर से अल्पप्राण मरूभूमि को सिंचित करते रहेंगे।

वैधानिक टिप्पणी (लीगल डिस्क्लेमर)

इस काव्य सम्बंधित पुस्तिका को किसी पूर्वनिर्मित साहित्यिक रचना की नक़ल करके नहीं बनाया गया है। फिर भी यदि यह किसी पूर्वनिर्मित रचना से समानता रखती है, तो यह केवल मात्र एक संयोग ही है। इसे किसी भी दूसरी धारणाओं को ठेस पहुंचाने के लिए नहीं बनाया गया है। पाठक इसको पढ़ने से उत्पन्न ऐसी-वैसी परिस्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे। हम वकील नहीं हैं। यह पुस्तक व इसमें लिखी गई जानकारियाँ केवल शिक्षा के प्रचार के नाते प्रदान की गई हैं, और आपके न्यायिक सलाहकार द्वारा प्रदत्त किसी भी वैधानिक सलाह का स्थान नहीं ले सकतीं। छपाई के समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ सही हों व पाठकों के लिए उपयोगी हों, फिर भी यह बहुत गहरा प्रयास नहीं है। इसलिए इससे किसी प्रकार की हानि होने पर पुस्तक-प्रस्तुतिकर्ता अपनी जिम्मेदारी व जवाबदेही को पूर्णतया अस्वीकार करते हैं। पाठकगण अपनी पसंद, काम व उनके परिणामों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। उन्हें इससे सम्बंधित किसी प्रकार का संदेह होने पर अपने न्यायिक-सलाहकार से संपर्क करना चाहिए।

अटल जी को श्रद्धा सुमन

उठ जाग होनहार,
प्रकाश हो या अंधकार।

बाँध तरकस पीठ पर,
भर तीर में फुंकार।।

झुका दे शीश दोनों का,
कर ना पाए फिर कभी भी वार।

उठ जाग होनहार,
प्रकाश हो या अंधकार।।

प्रेमयोगी वज्र विरचित

ये काल का प्रहार है

काल का प्रहार

आकाश अश्रु रो रहा
सृष्टि के पाप धो रहा

धरा मिलनकी इच्छासे
पर्वत भी धीरज खो रहा

चारों दिशा अवरुद्ध है
जल धाराएँ क्रुद्ध हैं

नर कंकाल बह रहे
हकीकत बयान कर रहे

कुदरत की गहरी मार है
ये काल का प्रहार है।

रिश्तों में अपनापन नहीं
बच्चों में भोलापन नहीं

शीतल रुधिर शिराओं में
धीरज नहीं युवाओं में

वाणी मधु से रिक्त है
हरएक स्वार्थ सिक्त है

अविश्वास से भरा हुआ
हर शख्स है डरा हुआ

इन्सानियत की हार है
ये काल का प्रहार है।

दहक रही भीषण अग्न
झुलस रहा है बाग-वन

सूरज के रक्त नयन से
बरस रहे अंगार हैं

गुलों में वो महक नहीं
परिंदों की वो चहक नहीं

ठूंठ बन गए तरू
भूखंड हो गए मरू

आबोहवा बेज़ार है
ये काल का प्रहार है।

जागृति के नाम पर
विलुप्त शिष्टाचार है

सभ्यता ठगी खड़ी
सुषुप्त संस्कार है

श्रेष्ठता के ढोंग का
ओढ़े हुए नक़ाब है

कर्तव्य बोध शून्य है
अधिकारों का हिसाब है

निश्छलता तार-तार है
ये काल का प्रहार है।

शब्दों से कैसे खेलूं मैं

शब्दों से कैसे खेलूं मैं

अन्तर में भावों की ज्वाला
धधक-धधक सी उठती है।

असह्य अखण्डित दाह-वेदना
जिह्वा पर मेरे ठिठकती है।

प्राकट्य जटिल सा हो जाता है
बस भीतर -भीतर झेलूं मैं।

अब तू ही बता हमदर्द मेरे!
शब्दों से कैसे खेलूं मैं?

इस जगती में हर श्वास की
परिमित एक कड़ी होती है।

हृदय निकट गहन रिश्तों की
चिन्ता -व्यथा बड़ी होती है।

धीर धरूं क्यों?मन करता है
सबकी पीड़ा ले लूं मैं।

अब तू ही बता हमदर्द मेरे!
शब्दों से कैसे खेलूं मैं?

कोकिल की मीठी स्वर लहरी में
झींगुर की झिन-झिन दोपहरी में

मस्त मयूरों के नृत्यों में
गुंजित भवरों के कृत्यों में

प्रच्छन्न सरस जीवन-पय घट से
मधु वंचित प्याले भर लूं मैं।

अब तू ही बता हमदर्द मेरे!
शब्दों से कैसे खेलूं मैं?

काल सरित की अविरल धारा
अबल-सबल हर कोई हारा।

मूर्ख है जो धारा संग उलझे
लहरें ऐसी जो न सुलझे।

अब तक कोई पार न पाया
कैसे वेग को ठेलूं मैं?

अब तू ही बता प्रियबन्धु मेरे!
शब्दों से कैसे खेलूं मैं?

दिल के इस मयखाने में जज़्बात ये साक़ी बनते हैं

दिल के इस मयखाने में जज़्बात ये साक़ी बनते हैं
आँखों के पैमाने से फिर दर्द के जाम छलकते हैं।

तेरी रहमतों की बारिश का इन्तज़ार मुझको

तेरी रहमतों की बारिश का इन्तज़ार मुझको
उम्मीद के ये बादल घिरने लगे हैं फिर से ।

जो ज़ख़्म अब से पहले नासूर बन गए थे
रिस्ते हुए ज़ख़्म वो भरने लगे हैं फिर से।

भीड़ न बनो जुदा हों भीड़ से खड़े

भीड़ न बनो जुदा हों भीड़ से खड़े,
जिधर भी तुम चलो काफ़िला साथ चल पड़े।

है ज़िन्दगी की राह मुश्किलात से भरी,
ये रास्ते न होंगे हीरे-मोती से जड़े।

भीड़ न बनो.......

मेहनत से ही मिलेगा मुक़द्दर में जो लिखा,
नहीं मिलेंगे स्वर्ण-कलश खेत में गढ़े।

भीड़ न बनो......

पढ़े लिखों का दौर यही शोर चारों ओर,
इन्सां वही है जो दिलों के ज़ज्बों को पढ़े।

भीड़ न बनो.....

हर लम्हा है बदलाव ये मन्ज़ूर तुम करो,
तोड़ रूढ़ियों की बन्दिशें आगे चलो बढ़े।

भीड़ न बनो.....

ज़हनी संगीनें तन चुकी हैं होश में आओ,
जिस्मानी जंग छोड़ के हम खुद से ही लड़ें।

भीड़ न बनो.....

मतलबी हर शख़्स यहाँ घात में बैठा,
मालूम नहीं किस ग़रज़ से शानों पे चढ़े।

भीड़ न बनो.....

करता है वो इन्साफ बिना भेदभाव के,
अपनी कमी का दोष हम किसी पे क्यों मढ़ें।

भीड़ न बनो.....

लियाक़त नहीं मोहताज किसी धन की दोस्तो!
खिलते हैं वे कमल भी जो कीचड़ में हों पड़े।

भीड़ न बनो.....।

दो अश्क

बैठ कहीं सुनसान जगह पर
ख़ुदग़रज़ी के इस आलम से

माज़ी के गुज़रे लम्हों में
कुछ देर मैं खोना चाहता हूँ

दो अश्क बहाना चाहता हूँ।

जाड़े की ठण्डी सुबह में
ठिठुरते हुए बाहों को बांधे

प्राची से उगते सूरज को
बेसब्री से तकना चाहता हूँ

दो अश्क बहाना चाहता हूँ।

पशु चराने दादी के संग
सुनसान सघन जंगल के भीतर

सर रखकर उनकी गोदी में
वही कथा मैं सुनना चाहता हूँ

दो अश्क————————-।

सुबह सबेरे खेत जोतते
पिता के पद-चिह्नों के पीछे

'चल' 'हट' कर उन बैलों को
सही दिशा दिखाना चाहता हूँ

दो अश्क————————-।

व्यर्थ उलझकर भाई-बहन से
सच्चे-झूठे आँसू लेकर

स्नेह भरे माँ के आँचल में
वो दुलार मैं पाना चाहता हूँ

दो अश्क——————-।

शहर गए बाबा के संग
भीड़ भरी सड़क पर उनकी

विश्वास भरी उँगली को थामे
उस भीड़ में खोना चाहता हूँ

दो अश्क——————।

कोई बड़ी शरारत हो जाने पर
सहमे हुए घबराए मन से

घास गई उस माँ की मैं
वही बाट जोहना चाहता हूँ

दो अश्क—————-।

बिना बताए माँ-बाबा जब
आँखों से ओझल हो जाते

घर आने पर कहीं दुबककर
मैं उनसे रूठना चाहता हूँ

दो अश्क—————-।

मासूम बचपना कहीं छोड़कर
हरपल मरता है शख़्स यहाँ

इतराता अपने जन्म दिवस पर
क्यों? यही जानना चाहता हूँ

दो अश्क———————।

परवाज़ रहता है क्यों इतना उत्सुक

परवाज़
रहता है क्यों इतना उत्सुक
तारीख़ नई लिखने को हरदम।

एक नए रिश्ते की ख़ातिर
अपना ही लहराए परचम।

उसको ही सर्वस्व मानकर
सबसे करे किनारा है।

काट स्वयं जड़ों को अपनी
ढूंढे नया सहारा है।

याद नहीं बिल्कुल भी उसको
बचपन में खेल जो खेले थे।

एहसास नहीं ज़रा भी उसको
माँ-बाप ने जो दु:ख झेले थे।

मिलकर भाई-बहन कभी
तितली के पीछे भागे थे

नई सुबह के इन्तज़ार में
रात-रात भर जागे थे।

एक-दूसरे के दु:ख-सुख से
जब एक साथ रो पड़ते थे।

मिलते ही एक नई ख़ुशी
तब फूल हंसी के झड़ते थे।

छोटे-छोटे कदमों से हम
धूल उड़ाया करते थे।

गाँव की पगडण्डी से
जब पढ़ने जाया करते थे।

उस वक़्त हमें मालूम नहीं था
वक़्त भी क्या दिखलाएगा।

दोस्त-भाई गाँव छोड़कर
शहरों का हो जाएगा।

भाग रहा है धन के पीछे
भूल के पिछली बातों को।

आ जाती जब याद कभी तो
तन्हा रोता रातों को।

छोड़ के अपनी जन्मस्थली
ढूंढे है प्यार परायों में।

त्याग मुसाफिर घर को अपने
ज्यों रात बिताए सरायों में।

खेत पड़े हैं बंजर सारे
माँ-बाप की आँखें सूखी हैं।

ताक रही रस्ता बेटे का
बस उसके दरस की भूखी हैं।

आई घर की याद उसे
बदला जब सारा परिवेश।

इतिहास दोहराया ज़माने ने
बच्चे भी उड़ गए परदेस।

पंछी भी उड़कर रातों को
आ जाते हैं नीढ़ में

पर खोया रहा तू क्यों बरसों तक
इन नगरों की भीड़ में?

छोड़ जवानी शहरों में
बूढ़ा लौटे गाँव को।

वृक्ष नहीं जो बचे हुए हैं
ढूंढे उनकी छाँव को।

जैसा बोया वैसा काटा
बचा नहीं अब कुछ भी शेष।

झुकी कमर से लाठी टेके
खोजे गत जीवन अवशेष।

यन्त्र बना है मानव अब तो
बलि चढ़ा जज़्बातों की।

कभी नहीं करता तहलील
उत्पन्न हुए हालातों की।

कट के अपनी डोर से
पतंग कोई उड़ न पाए।

परवाज़ भरी थी जिस ज़मीन से
उसी ज़मीन पे गिर जाए।

ऐ ज़िन्दगी ! तू बेहद खूबसूरत है।

ऐ ज़िन्दगी ! तू बेहद खूबसूरत है।
तेरा हर नाज़ो नख़रा सह लेते हैं।

रुलाए तू हंसाए तू,
नश्तर चुभा,सहलाए तू।

तेरी लौ की तपिश में परवाने बन जल जाते हैं,
कुर्बान हुए जाते हैं ।

ऐ ज़िन्दगी!....

मयस्सर हुई तू बहुत खुशनसीबी से
नहीं कोई ताल्लुक अमीरी-ग़रीबी से

तड़पाए तू,लहराए तू।
सपने दिखा,तरसाए तू।

तेरी रौ की कशिश में
तिनके बन बह जाते हैं,भँवर में फंस जाते हैं।

ऐ ज़िन्दगी!.....

तमाशाई हैं सब अजब तेरी रियासत के
नहीं कोई मालिक तेरी इस विरासत के

ललचाए तू,भरमाए तू,
दिल से लगा,ठुकराए तू।

तेरी हवा की जुम्बिश से
पत्ते बन उड़ जाते हैं,ख़ाक में मिल जाते हैं।

ऐ ज़िन्दगी!

फिर से तेरी रहमतों की बारिश का इंतज़ार मुझको

फिर से
तेरी रहमतों की बारिश का इंतज़ार मुझको
उम्मीद के ये बादल घिरने लगे हैं फिर से।

जो ज़ख़्म अब से पहले नासूर बन गए थे
रिस्ते हुए ज़ख़्म वो भरने लगे हैं फिर से।

सफर में ज़िन्दगी के थी धूप चिलचिलाती
झुलसे हुए पैरों से थी चाल डगमगाती।

तपती हुई ज़मीं पर चलते हुए अचानक
दरख़्तों की घनी छाया आने लगी है फिर से।

ख़ौफ़ से भरा था इन्सानियत का मंज़र
ख़ून से सना था हैवानियत का ख़ंज़र।

फैली हुई थी हरसु दहशत की धुन्ध गहरी
हिम्मत की हवा से वो छटने लगी है फिर से।

अन्धेरों में भटकता था वो राह से अन्जाना
शम्मा को तड़पता है जैसे कोई परवाना।

काली अन्धेरी रातें जो राह रोकती थी
जुगनू के कारवां से रोशन हुई हैं फिर से।

काली घटा ने घिर के ऐलान कर दिया है
सागर का पानी उसने जी भर के पी लिया है।

हर शाख़ पत्ते पत्ते पे लगी बौछारें गिरने
कुदरत के ज़र्रे-ज़र्रे में छाया ख़ुमार फिर से।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए

शुष्क कण्ठ की बनूं तरलता
जटिल भूमि की बनूं सरलता

उमड़-घुमड़ कर नभ पर छाए
उस बादल का जल बन जाऊं।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

वीरों के माथे का चन्दन
जग करता है जिसका वन्दन

प्रस्फुटित हुआ है अंकुर जिसमें
उस माटी का कण बन जाऊं।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

सुमन-सौरभ को बिखराता
संतप्त हृदय को हर्षाता

जो दग्ध वपु को कर दे शीतल
वो समीर झोंका बन जाऊँ।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

सुलगाए साहस की ज्वाला
झुलसाए आतंक का जाला

बुझी आशा का दीप जलाए
वो अग्नि-स्फुलिंग बन जाऊं।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

उज्ज्वल चन्द्र-सितारों वाला
पर्वत की दीवारों वाला

जिसके नीचे जीव सृजन हो
उस नभ का हिस्सा बन जाऊं।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए
जब भी मैं धरा पर आऊं।

जन्म-मरण के बन्धन से
उस दिन मुक्ति देना ईश्वर!

पर-नयनों के अश्रु से
जिस दिन द्रवित न होने पाऊं

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

हकीकत में जिंदगी तो काँटों ने संवार दी

चाहत में हमने गुल की
उम्रें गुज़ार दी।

हकीक़त में ज़िन्दगी तो
कांटों ने संवार दी।

इल्ज़ाम क्यों दें वक्त को
हम चल न पाए साथ।

इसने दी गर ख़िज़ा तो
किसने बहार दी?

सब बन बैठे नाव खवैया

हवा चली ये कैसी भैया
कूद पड़े सब एक ही नैया

पता नहीं, पतवार चीज़ क्या?
सब बन बैठे नाव खवैया।

लय और ताल समझ न आई
नाच पड़े सब ता-ता थैया

आँख मूंद सब दौड़ लगाए
मन्ज़िल सबकी भूल-भूलैया।

पल में क्या हो? खबर नहीँ है
सबका एक ही नाच नचैया।

स्वयं की तू तलाश कर

क्षणिक सुखों की चाह में
भटक रहा इधर-उधर

कस्तूरी की खुशबू के लिए
हिरण की तरह बेख़बर

वज़ूद क्या तू कौन है?
इतनी-सी पहचान कर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू पहचान कर।

राह में बिखरे हुए
कांटे भी चुन लें कभी

रोते हुए इन्सान का
दर्द भी सुन ले कभी

क्या तू मुंह दिखाएगा
जाएगा जब उसके घर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

मर गया है कौन ये
पास जा के देख ले

ज़ुल्म क्या इस पर हुआ
चिन्तन में चिता सेंक लें

आवाज़ उठा अर्श तक
किसका तुझे इतना डर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

बस्ती में ख़ुदग़र्जों की
निराश होना छोड़ दें

कर दे बुलन्द हस्ती को
हवाओं का रुख मोड़ दे

गुज़रेगा जिन राहों से
लोग झुकाएंगे सर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

शान्ति-ध्वज को छोड़ दें
शमशीर उठा तन के चल

मसीहा बन कमज़ोर का
पड़ने दें माथे पे बल

आग़ाज़ कर जीवन का तू
अन्जाम की फ़िक्र न कर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

सांसें मिली संसार में
मक़सद कोई ज़रूर है

शाख़ पर पत्ता भी वरना
हिलता नहीं हुज़ूर है

लगा दे यहाँ हाज़िरी
दिन-रात अपना कर्म कर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

तरकश में अभी कई बाण पड़े हैं

हंसा कौन ये दूर गगन में
क्या सुन पाए तुम भी यारो

मौन व्याप्त है चहुं दिशा में
अब तो सम्भलो अहम के मारो

अति का बुरा सर्वत्र सुना था
आज घटित हुए देख लिया है

फिसला जब जीवन मुट्ठी से
फिर तुमने उसे याद किया है।

जीवनदायी धरा पर तुमको
जीना रास नहीं आया है

जीवन सम्भव नहीं जहां था
वो मंगल-चाँद तुम्हें भाया है

प्रकृति विरुद्ध जो काम किए हैं
उसका दण्ड तो पाना होगा

तुमने सोचा शाश्वत हैं हम
अब समय से पूर्व जाना होगा।

भूमि,नभ,जल,वायु,अग्नि
पंच तत्वों को भी न छोड़ा

विधि निर्मित जो नियम बने थे
उन नियमों का पालन तोड़ा

विज्ञान नहीं भगवान से ऊपर
इतना अगर तुम जाने होते

आज नहीं अपने कन्धो पर
मानवता की लाशें ढोते।

प्रमाद भरा है कैसा तुम में
दानवता तुमसे हारी है

भक्ष लिया हर जीव जगत का
अब सोचो किसकी बारी है

शर्मसार है जगत नियन्ता
महसूस हुई लाचारी है

सख्त़ फैसला अब वो लेगा
सृष्टि की ज़िम्मेदारी है।

अभी तो ये आरम्भ हुआ है
क्यों इतने बेचैन हो रहे

समय है ये कर्मों के फल का
वर्षों से जिसका बीज बो रहे

किसके मद में उन्मत थे तुम
अब शीश झुकाए मौन खड़े हैं

एक ही तीर चलाया उसने
तरकश में अभी कई बाण पड़े हैं।

मानव जीवन के विरोधाभास पर छोटी सी गजल

जब से कसम ली उसने शराफ़त से जीने की
पैमाईश लगे अब करने बुज़दिल भी सीने की।

हिक़ारत से देखते थे जो मयख़ानों की तरफ़
आदत उन्हें अब हो गई हर रोज़ पीने की।

फ़ितरत में जिनकी डूबना बचाए उन्हें कौन
समन्दर में ज़रूरत नहीं उनको सफ़ीने की।

नहीं वास्ता मेहनत से जिनका दूर तलक यार
करते नहीं इज्ज़त वो किसी के पसीने की।

इकट्ठा किए रहे जो कौड़ियों को अपने पास
कीमत क्या जाने नासमझ उजले नगीने की।

भरे हैं जो बारूद से हर वक़्त बेशुमार
देते हैं नसीहत वो सभी को सकीने की।

कोरोना से कभी डरो ना

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।।

घर पर ही हमेशा रहना
हाथ हमेशा धोते रहना।

घर पर ही हमेशा रहना
हाथ हमेशा धोते रहना।।

दो गज दूरी बना के रखना
घर पे बने पकवान ही चखना।

दो गज दूरी बना के रखना
घर पे बने पकवान ही चखना।।

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।।

सेनी-टाईजर जेब में रखना
मुँह को अपने मास्क से ढकना।

सेनी-टाईजर जेब में रखना
मुँह को अपने मास्क से ढकना।।

नहीँ किसी से हाथ मिलाना
हाथ जोड़ कर रस्म निभाना।

नहीँ किसी से हाथ मिलाना
हाथ जोड़ कर रस्म निभाना।।

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।।

मौका मिले लगा लो टीका
इससे वो पड़ेगा फीका।

मौका मिले लगा लो टीका
इससे वो पड़ेगा फीका।।

खांस बुखार तुम्हें जो आएं
मुफ्त में इसकी जाँच कराएं।

खांस बुखार तुम्हें जो आएं
मुफ्त में इसकी जाँच कराएं।।

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।।

खत्म करेंगे हम कोरोना
को-रो-ना से कभी डरो ना।

खत्म करेंगे हम कोरोना
को-रो-ना से कभी डरो ना।।

आओ मिलके कसम ये खाएँ
मिल के को-रो-ना को भगाएँ।

आओ मिलके कसम ये खाएँ
मिल के को-रो-ना को भगाएँ।।

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।

आओ मिल कविता बनाएं
जग से को-रो-ना भगाएँ।।

-हृदयेश बाल

स्कूल चले हम

घर को चले हम, घर को चले हम
स्कूल से अपने घर को चले हम।

को-रो-ना से डर हरदम
अपने-अपने घर चले हम।।

घर को चले हम, घर को चले हम
स्कूल से अपने-घर को चले हम।

खेल नहीं अब सकते हम
स्कू-ल के मैदान में।

कूद नहीं अब सकते हम
खेलों के जहान में।।

अब तो मजे करेंगे हम
खेत पर खलिहान में।

बूढ़ी अम्मा के संग-संग
बतियाएंगे हम हरदम।।

घर को चले हम, घर को चले हम
स्कूल से अपने घर को चले हम।

को-रो-ना से डर हरदम
अपने-अपने घर चले हम।।

घर को चले हम, घर को चले हम
स्कूल से अपने-घर को चले हम।

ऑनलाइन से पढ़ेंगे हम
ऑलराउंडर बनेंगे हम।

फालतू मीडिया छोड़कर
नॉलेज ही चुनेंगे हम।।

घर में योग करेंगे हम
इंडोर खेल करेंगे हम।

प्रातः जल्दी उठ करके
वॉकिंग भी करेंगे हम।।

घर को चले हम, घर को चले हम
स्कूल से अपने घर को चले हम।

को-रो-ना से डर हरदम
अपने-अपने घर चले हम।।

घर को चले हम, घर को चले हम
स्कूल से अपने-घर को चले हम।

स्कूल तो अपने जाएंगे
वैक्सी-नेशन के बाद।

फिर तो हम हो जाएंगे
जेल से जैसे हों आजाद।।

फिर तो नहीं करेंगे हम
व्यर्थ समय यूँ ही बरबाद।

पढ़-लिख कर व खेल कर
हम होंगे बड़े आबाद।।

शिक्षार्थ स्कूल जाएं हम
सेवार्थ हो आएं हरदम।

स्कूल का नाम रौशन करके
देश को रौशन करदें हम।।

स्कूल चले हम, स्कूल चले हम
घर से अपने- स्कूल चले हम।

हरा के उस को-रो-ना को
अपने-अपने स्कूल चले हम।।

स्कूल चले हम, स्कूल चले हम
घर से अपने-स्कूल चले हम।

बीच का बंदर खेलेंगे
स्टप्पू भी अब खेलेंगे।

लुक्का-छुप्पी खेलेंगे
चोर-सिपाही खेलेंगे।।

इक-दूजे संग दौड़ें हम
प्रेम के धागे जोड़ें हम।

मिलजुल रहना सीखें हम
कदम से सबके मिला कदम।।

स्कूल चले हम, स्कूल चले हम
घर से अपने-स्कूल चले हम।

हरा के उस को-रो-ना को
अपने-अपने स्कूल चले हम।।

स्कूल चले हम, स्कूल चले हम
घर से अपने-स्कूल चले हम।

-हृदयेश बाल

हे! पर्वतराज करोल [भक्तिगीत-कविता]

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल।

सुबह-सवेरे जब भी उठता
तू ही सबसे पहले दिखता।
सुबह-सवेरे जब भी उठता
तू ही सबसे पहले दिखता।

सूरज का दीपक मस्तक पर
ले के जग को रौशन करता।
सूरज का दीपक मस्तक पर
ले के जग को रौशन करता।

सूरज को डाले जल से तू
सूरज को डाले जल से तू
सूरज संग नहाया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल।

काम बोझ से जब भी थकता
सर ऊपर कर तुझको तकता।
काम बोझ से जब भी थकता
सर ऊपर कर तुझको तकता।

दर्शन अचल वदन होने से
काम से हरगिज़ न रुक सकता।
दर्शन अचल वदन होने से
काम से हरगिज़ न रुक सकता।

कर्मयोग का पावन झरना
कर्मयोग का पावन झरना
पल-पल तूने बहाया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल।

बदल गए सब रिश्ते नाते
बदल गया संसार ये सारा।
बदल गए सब रिश्ते नाते
बदल गया संसार ये सारा।

मित्र-मंडली छान के रख दी
हर-इक आगे काल के हारा।
मित्र-मंडली छान के रख दी

हर-इक आगे काल के हारा।

खुशकिस्मत हूँ तेरे जैसा
खुशकिस्मत हूँ तेरे जैसा
मीत जो मन का पाया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल।

सबसे ऊंचे पद पर रहता
कहलाए देवों का दे-वता।
सबसे ऊंचे पद पर रहता
कहलाए देवों का दे-वता।

उठकर मूल अधार से प्राणी
रोमांचित मस्तक पर होता।
उठकर मूल अधार से प्राणी
रोमांचित मस्तक पर होता।

सब देवों ने मिलकर तेरा
सब देवों ने मिलकर तेरा
प्यारा रूप बनाया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल।

जटा बूटियाँ तेरे अंदर
नाग मोरनी मानुष बंदर।
जटा बूटियाँ तेरे अंदर
नाग मोरनी मानुष बंदर।

गंगा नद नाले और झरने
नेत्र तीसरा भीषण कन्दर।
गंगा नद नाले और झरने
नेत्र तीसरा भीषण कन्दर।

चन्द्र मुकुट पर तोरे सोहे
बरबस ही मोरा मन मोहे।
चन्द्र मुकुट पर तोरे सोहे
बरबस ही मोरा मन मोहे।

उपपर्वत नीचे तक जो है
नंदी वृष पर बैठे सो है।
उपपर्वत नीचे तक जो है
नंदी वृष पर बैठे सो है।

बिजली सी गौरा विराजे
कड़कत चमकत डमरू बाजे।
बिजली सी गौरा विराजे
कड़कत चमकत डमरू बाजे।

आंधी से हिलते-डुलते वन
नटराजन के जैसे साजे।
आंधी से हिलते-डुलते वन
नटराजन के जैसे साजे।

बाघम्बर बदली का फूल
धुंध बनी है भस्म की धूल।
बाघम्बर बदली का फूल
धुंध बनी है भस्म की धूल।

गणपत जल बन बरसे ऊपर

ऋतु मिश्रण का है तिरशूल।
गणपत जल बन बरसे ऊपर
ऋतु मिश्रण का है तिरशूल।

मन-भावन इस रूप में तेरे
मन-भावन इस रूप में तेरे
शिव का रूप समाया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
जब जग ने ठुकराया
तू-ने अपनाया।

हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल
तेरा अद्भुत साया।
हे! पर्वतराज करोल।
~हृदयेश बाल~bhishm

जहाँ भी देखो वहीं दक्ष हैं

जहां भी देखो वहीँ दक्ष हैं।
अहंकार से भरे हुए
अपने-अपने पक्ष हैं।

कोई याग-यज्ञ में डूबा
कोई दुनिया का अजूबा।
कोई बिजनेसमेन बना है
हड़प के बैठा पूरा सूबा।

कोई याग-यज्ञ में डूबा
कोई दुनिया का अजूबा।
कोई बिजनेसमेन बना है
हड़प के बैठा पूरा सूबा।

एक नहीँ धंधे लक्ष हैं
जहां भी देखो वहीँ दक्ष हैं।
अहंकार से भरे हुए
अपने-अपने पक्ष हैं।
अहंकार से भरे हुए
अपने-अपने पक्ष हैं।

कर्म-मार्ग में रचे-पचे हैं
राग-रागिनी खूब मचे हैं।
नाम-निशान नहीं है सती का
शिव भी उस बिन नहीं जचे हैं।

कर्म-मार्ग में रचे-पचे हैं
राग-रागिनी खूब मचे हैं।
नाम-निशान नहीं है सती का
शिव भी उस बिन नहीं जचे हैं।

अंधियारे से भरे कक्ष हैं
जहां भी देखो वहीँ दक्ष हैं।
अहंकार से भरे हुए
अपने-अपने पक्ष हैं।
अहंकार से भरे हुए
अपने-अपने पक्ष हैं।

ढोंग दिखावा अंतहीन है
मन की निष्ठा अति महीन है।
फल पीछे लट्टू हो रहते

फलदाता को झूठा कहते।

ढोंग दिखावा अंतहीन है
मन की निष्ठा अति महीन है।
फल पीछे लट्टू हो रहते
फलदाता को झूठा कहते।

चमकाते बस नयन नक्श हैं
जहां भी देखो वहीँ दक्ष हैं।
अहंकार से भरे हुए
अपने-अपने पक्ष हैं।
अहंकार से भरे हुए
अपने-अपने पक्ष हैं।

प्रेम-घृणा का झूला झूले
दर्शन वेद पुराण का भूले।
बाहु-बली नहीं कोई भी
नभ के पार जो उसको छू ले।

प्रेम-घृणा का झूला झूले
दर्शन वेद पुराण का भूले।
बाहु-बली नहीं कोई भी
नभ के पार जो उसको छू ले।

शिवप्रकोप से न सरक्ष हैं
जहाँ भी देखो वहीँ दक्ष हैं।
अहंकार से भरे हुए
अपने-अपने पक्ष हैं।
अहंकार से भरे हुए
अपने-अपने पक्ष हैं।

~भीष्म

जय माता दुर्गे जय माता तारा

जय माता दुर्गे
जय माता तारा।
हम पापी मानुष को
तेरा सहारा।।

जय माँ भवानी
तेरा जयकारा।
भव-सा-गर का
तू ही किनारा।।
जय माता दुर्गे------

हिंगलाज नानी।
जय हो जयकारा
तेरे लिए मेरा
जीवन पहारा।।
जय माता---

भटकूँ अवारा
बेघर बिचारा।
तेरे सिवा नहीं
अब कोई चारा।।
जय माता---

जग देख सारा
भटका मैं हारा।
भूलूँ कभी न
तेरा नजारा।।
जय माता---

हे अम्बे रानी
जय जय जयकारा
पागल सुत तेरा
नकली खटारा।।
जय माता----

तू ही जगमाता
तू ही विधाता।
तू जो नहीं हमें
कुछ भी न आता।।
हम थरमामीटर
तू उसमें पारा।
तू क्षीरसागर

हम पानी खारा।।
जय माता---

किसमत का मारा
जग में नकारा
तू जो मिले जग
पाए करारा।।
जय माता---

जो है हमारा
सब है तुम्हारा।
दूँ क्या मैं तुझको
जो हो हमारा।।
जय माता दुर्गे
जय माता तारा।
हम पापी मानुष को
तेरा सहारा।।
साभार~भीष्म🙏@bhishmsharma95

कब तक सत्य छुपाओगे

कब तक सत्य छुपाओगे
कब तक प्रकाश दबाओगे।

खड़ा है रावण धर्म में
पड़ा है खंजर मर्म में।
पाप है अपने चरम में
मनुता डूबी शर्म में।
हिंसा का ढूंढोगे
कब तक बहाना।
जैसा करोगे
वैसा पाओगे।
कब तक सत्य छुपाओगे
कब तक प्रकाश दबाओगे।

पूजा पंडाल सज चुके
अपना धर्म भज चुके।
रावण धर्म के लोगों के
हिंसक कदम नहीँ रुके।
पुतले को जलाओगे
अपना मन बहलाओगे।
कब तक सत्य छुपाओगे
कब तक प्रकाश दबाओगे।

अगला वर्ष आएगा
यही बहारें लाएगा।
राज करेगा वीर बुजदिल
ये ही मंजर पाएगा।
मानवता को बुजदिली
कब तक तुम कह पाओगे।
कब तक सत्य छुपाओगे
कब तक प्रकाश दबाओगे।
साभार~भीष्म@bhishmsharma95

राम से बड़ा राम का नाम~भक्तिगीत कविता

जग में सुंदर हैं सब काम
पर मिल जाए अब आ~राम।

बोलो राम राम राम
राम से बड़ा राम का नाम।१।-2

दीपावली मनाएं हम
खुशियां खूब लुटाएं हम।

आ~राम आ~राम रट-रट के
काम को ब्रेक लगाएं हम।२।

मानवता को जगाएँ हम
दीप से दीप जलाएँ हम।-2

प्रेम की गंगा बहाएं हम-2
नितदिन सुबहो शाम।३।

बोलो राम राम राम
राम से बड़ा राम का नाम।-2

जग में------

वैर-विरोध को छोड़ें हम
मन को भीतर मोड़ें हम।

ज्ञान के धागे जोड़ें हम
बंधन बेड़ी तोड़ें हम।४।

दिल से राम न बोलें हम
माल पराया तोलें हम।-2

प्यारे राम को जपने का-2
ऐसा हो न काम।५।

बोलो राम राम राम
राम से बड़ा राम का नाम।-2

जग में------

मेहनत खूब करेंगे हम
रंगत खूब भरेंगे हम।

मन को राम ही देकर के
तन से काम करेंगे हम।६।

अच्छे काम करेंगे हम
अहं-भ्रम न भरेंगे हम।-2

बगल में शूरी रखकर के-2
मुँह में न हो राम।७।

बोलो राम राम राम
राम से बड़ा राम का नाम।-2

जग में------

भाईचारा बाँटें हम
शिष्टाचार ही छांटें हम।

रूढ़ि बंदिश काटें हम
अंध-विचार को पाटें हम।८।

धर्म विभेद करें न हम
एक अभेद ही भीतर हम।-2

कोई शिवजी कहे तो कोई-2
दुर्गा कृष्ण या राम।९।

बोलो राम राम राम
राम से बड़ा राम का नाम।-2

जग में------

धुन प्रकार~ जग में सुंदर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम [भजनसम्राट अनुप जलोटा गीत]

साभार~🙏@bhishmsharma95

अहं भरा है कैसा तुझमें

ये कर दूंगा, वो कर दूंगा
अहं भरा है कैसा तुझमें

कदम एक न चल पाएगा
इक दिन मिल जाएगा मुझमें।

तेरी सांसों की माला में
मनके मैंने गिनकर डाले

कितने मनके किस माला में
क्यों गिनने का भरम तू पाले।

तेरी क्या औकात है बन्दे
करता तू जो मैं करवाता

पुतली तू धागों से उलझी
तरह-तरह से मैं नचवाता।

बाज़ार

आंख गड़ाए सब हैं बैठे
मौक़ा ढूंढ रहा हर कोई

चांदी के कुछ सिक्कों खातिर
मानव ने मानवता खोई।

पेट भरे हैं हद से ज्यादा
भूख नहीं क्यों इनकी मिटती

फिर भी बेबस की थाली में
जाकर इनकी नज़रें टिकती।

लिखवा लाए उम्र का पट्टा
कुछ लोग समझ ये बैठे हैं

उनकी मुट्ठी में सबकुछ है
इस मिथ्याबोध में ऐंठे हैं।

औक़ात सभी को दिखलाता है
वक्त एक-सा कब रहता है

लूट सका न कोई धरा को
इतिहास सदा ये कहता है।

देख के अश्कों को आंखों में
जज्बातों की बोली लगती

कहीं लाशों की सौदेबाज़ी
सांसों की कहीं हाटें सजती।

तोल तराज़ू में मजबूरी
लाचारी बड़ी महंगी बिकती

आंच अंगारों की अति फीकी
तन की तपन पे रोटी सिकती।

ख़ुदगर्जी की हदें नहीं हैं
मानवता की जगह कहां है

विवशता का बाज़ार ये दुनिया
भावों का व्यापार यहां है।

हमें माफ़ करना ईश्वर

न ज़मीं न आसमां पे
फिर सुकूं मिले कहां पे

कुछ शक्ति ऐसी दे दे
हो जन्म सफल यहां पे।

न ज़मीं न आसमां पे......

हम भुला चुके हैं उसको
जिसने हमें बनाया

काटा वो पेड़ हमनें
जिसकी थी हम पे छाया

जब लगा जिस्म जलने
तब भेद तेरा पाया।

न ज़मीं न आसमां पे......

जगमगाती बस्तियों में
कुछ घर हैं जो अन्धेरे

आती हैं सिसकियां- सी
क्यों कष्ट उनको घेरे

तू जला दे करूणा दीपक
ओ! नाथ ईश मेरे।

न ज़मीं न आसमां पे......

कुदरत में तेरी हर शै
फिर गुरबत क्यों यहां है

कोई पाए हद से ज़्यादा
कोई तरसे तू कहां है?

हो तेरी कृपा बराबर
सब तेरा ही जहां है।

न ज़मीं न आसमां पे.....

हमें माफ़ करना ईश्वर
गर भूल हम से होए

होकर जुदा हम तुझसे
कभी चैन से न सोए

चाहत में दर्शनों की
मेरी आंखें रोज़ रोए

न ज़मीं न आसमां पे
फिर सुकूं मिले कहां पे....

मन उड़ने को बेहाल है

बन्धी अदृश्य बेड़ियां
मन उड़ने को बेहाल है।

बिखरे हैं दाने मोह के
विस्तीर्ण माया जाल है।

विषयों की गहरी ओट से
इन्द्रियां शिकारी हंस रही।

भ्रमित हुई अबोध- सी
मन चिड़िया उसमें फंस रही।

गन्तव्य बोध उसको है
फड़फड़ाती बार-बार है।

बेचैन पंख कट रहे
छल-सूत्र तेज़ धार है।

सिसकी---------

ख़ामोशी का आलम था
हरसु उदास मंज़र

उमड़ रहा था गहरा
जज़्बात का समन्दर

सोया हुआ जहां था
थी चांदनी भी छिटकी

अन्तर की वेदना ज्यों
लबों पे आके ठिठकी

सुनाई दी वही सिसकी
कल रात फिर से उसकी।

सहमा हुआ-सा चेहरा
कुछ बोलती निगाहें

मंजिल सुगम नहीं थी
कांटों भरी थी राहें

पर चल पड़ा अकेला
साया था साथ उसके

मेहमान वो भी पल का
आहट थी अब निशा की

सुनाई दी वही सिसकी
कल रात फिर से उसकी।

टिमटिमाते जुगनुओं से
झिलमिलाती स्याह रातें

अंधेरों से नहीं उसने
उजालों से खाई मातें

गहरे थे ज़ख्म इतने
अपनों ने की थी घातें

यक़ीं करें अब किसका
ये दिल में थी ख़लिश-सी

सुनाई दी वही सिसकी
कल रात फिर से उसकी।

इक टक निहारती थी
पथराई सूनी आंखें

दौड़ थी मुसलसल
उखड़ी हुई थी सांसें

बेबस थके पंछी-सी
सिमट चुकी थी पांखें

चेहरे पे झलकती थी
अजीब कशमकश-सी

सुनाई दी वही सिसकी
कल रात फिर से उसकी।

हुनर की न कमी थी
हालात का मारा था

क़िस्मत से नहीं अपनी
व्यवस्था से वो हारा था

नशे में इक़्तदार के
अहले सियासी मस्त थे

गुहार दे तो किसको
ज़िल्लत ज़मीर की थी

सुनाई दी वही सिसकी
कल रात फिर से उसकी।

मन रूठ भी जाए, रूठने दे!

कर्मक्षेत्र पर परिश्रम करते
तन टूट भी जाए, टूटने दे!

सत्य-राह पर चलते-चलते
कुछ छूट भी जाए, छूटने दे!

भरे नहीं जो कई वर्षों से
प्याले फूट भी जाए, फूटने दे!

कर एकत्रित ज्ञान की पूंजी
कोई लूट भी जाए, लूटने दे!

सर्व प्रथम है आत्म-तुष्टि
मन रूठ भी जाए, रूठने दे!

अच्छा लगता नूतन साल

अच्छा लगता नूतन साल
जैसा भी हो चाहे हाल।
परिवर्तन की कैसी चाल
काल का कैसा मायाजाल।

~Happy new year

हँस चुगे जब दाना-दुनका, कवूआ मोती खाता है~ समसामयिक सामाजिक परिस्थितियों पर आधारित एक आलोचनात्मक, कटाक्षपूर्ण व व्यंग्यात्मक कविता-गीत

ज्ञानीजन कहते दुनिया में
ऐसा कलियुग आता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानी-ध्यानी ओझल रहते
काल-सरित के संग न बहते।

शक्ति-हीनता के दोषों को
काल के ऊपर मढ़ते रहते।

मस्तक को अपने बलबूते
बाहुबली झुकाता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

खूब तरक्की है जो करता
नजरों में भी है वो खटकता।

होय पलायित बच जाता या
दूर सफर का टिकट है कटता।

अच्छा काम करे जो कोई
वो दुनिया से जाता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

अपनी डफली राग भी अपना
हर इक गाना गाता है।

कोई भूखा सोए कोई
धाम में अन्न बहाता है।

दूध उबाले जो भी कोई
वही मलाई खाता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

संघे शक्ति कली-युगे यह
नारा सबको भाता है।

बोल-बोल कर सौ-दफा हर
सच्ची बात छुपाता है।

भीड़ झुंड बन चले जो कोई
वही शिकार को पाता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

जितने ढाबे उतने बाबे
हर-इक बाबा बनता है।

लाठी जिसकी भैंस भी उसकी
मूरख बनती जनता है।

शून्य परीक्षा हर इक अपनी
पीठ को थप-थपाता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

करतब-बोध का ठेका देता
कोई भी तब पेन न लेता।

मेल-जोल से बात दूर की
अपना भी न रहता चेता।

हर इक अपना पल्ला झाड़े
लदे पे माल चढ़ाता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

शिष्टाचार किताबी होता
नौटँकी खिताबी होता।

भीतर वाला सोया होता
सर्व-धरम में खोया होता।

घर के भीतर सेंध लगाकर
घरवाले को भगाता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

मेहनत करे किसान बिपारी
खूब मुनाफा पाता है।

बैठ-बिठाय सिंहासन पर वो
पैसा खूब कमाता है।

देकर करज किसानों को वह
अपना नाच नचाता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

जात-धरम को ऊपर रख कर
हक अपना जतलाता है।

शिक्षा-दीक्षा नीचे रख कर
शोषित वह कहलाता है।

निर्धन निर्धनता को पाए
पैसे वाला छाता है।

हँस चुगे जब दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

भाव सुमन

ज्ञानीजन----

साभार~@bhishmsharma95🙏

गाने के लिए उपयुक्त वैकल्पिक रचना (मामूली परिवर्तन के साथ)~
(हँस चुगे है दाना-दुनका, कवूआ मोती खाता है)~एक समसामयिक कटाक्षपूर्ण कविता-गीत

ज्ञानीजन कहते जगत में
ऐसा कलियुग आता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानी-ध्यानी ओझल रहते
काल-सरित तट रहते हैं।

शक्ति-हीनता के दोषों को
काल के ऊपर मढ़ते हैं।

मस्तक को अपने बलबूते-2
बाहु-बली झुकाता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

खूब तरक्की करता है जो
आँखों में वो खटकता है।

होय पलायित बच जाता जां
दूर-टिकट तब कटता है।

अच्छा काम करे जो कोई-2
वो दुनिया से जाता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

अपनी डफली राग भी अपना
हर इक गाना गाता है।

कोई भूखा सोए कोई
धाम में अन्न बहाता है।

दूध उबाले है जो कोई-2
वो ही मलाई खाता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

संघे शकती कली-युगे यह
नारा सबको भाता है।

बोल-बोल के सौ-दफा हर
सच्ची बात छुपाता है।

भीड़-झुंड चलता जो कोई-2
वो ही शिकारी पाता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

जितने ढाबे उतने बाबे
हर-इक बाबा बनता है।

लाठी जिसकी भैंस भी उसकी
मूरख बनती जनता है।

शून्य परीक्षा हर इक अपनी-2
पीठ को थप-थपाता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

करतब का ठेका देता है
पेन न कोई लेता है।

मेल-जोल से बात दूर की
अपना भी न चेता है।

हर इक अपना पल्ला झाड़े-2
लदे पे माल चढ़ाता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

शिष्टाचार किताबी होता
नौटँकी व खिताबी है।

भीतर वाला सोया होता
सर्व-धरम में खोया है।

घर के भीतर सेंध लगाकर-2
घरवाले को भगाता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

मेहनत करे किसान बिपारी
पैसा खूब कमाता है।

बैठ-बिठाय सिंहासन पर वो
खूब मुनाफा पाता है।

देकर करज किसानों को वो-2
अपना नाच नचाता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

जात-धरम को ऊपर रख कर
हक अपना जतलाता है।

शिक्षा-दीक्षा नीचे रख कर
शोषित वह कहलाता है।

निरधन निरधनता को पाए-2
पैसे वाला छाता है।

हँस चुगे है दाना-दुनका
कवूआ मोती खाता है।

ज्ञानीजन----

ए जी रे---
ए जी रे---

धुन प्रकार~रामचंद्र कह गए सिया से, ऐसा कलियुग आएगा---

साभार~@bhishmsharma95🙏

हर क्षण तो मरते रहते हैं

शैशव से बाल्यावस्था में
बाल्या से किशोरावस्था में

किशोरा से युवावस्था में
युवा से वृद्धावस्था में

प्रत्यवस्था परिवर्तन में
हम रूप बदलते रहते हैं

भयाक्रांत हो क्यों मृत्यु से
हर क्षण तो मरते रहते हैं।

बचपन में जो बच्चा देखा
यौवन में पहचान न पाए

एक बार जो उम्रें बीती
लौट के वापिस कभी न आए

बस यादों के झुरमुट से
उसे देख तरसते रहते हैं

भयाक्रांत हो क्यों मृत्यु से
हर क्षण तो मरते रहते हैं।

ढाई आखर प्रेम का पढ़ ले, जो कोई वो ही ज्ञानी

बोल नहीं सकता कुछ भी मैं
घुटन ये कब तुमने जानी।

चला है पदचिन्हों पर मेरे
मौनी हो या फिर ध्यानी।

मरने की खातिर जीता मैं
जीने को मरते हो तुम।

खोने का डर तुमको होगा
फक्कड़ का क्या होगा गुम।

हर पल एकनजर से रहता
लाभ हो चाहे या हानि।

बोल नहीं सकता ----

मेरे कंधों पर ही तुमने
किस्मत अपनी चमकाई।

मेरे ही दमखम पर तुमने
धनदौलत इतनी पाई।

निर्विरोध हर चीज स्वीकारी
फूटी-कौड़ी जो पाई।

खाया सब मिल-बाँट के अक्सर
बन इक-दूजे संग भाई।

कर्म-गुलामी की पूरी, ले
कुछ तिनके दाना-पानी।

बोल नहीं---

तेज दिमाग नहीं तो क्या गम
तेज शरीर जो पाया है।

सूंघे जो परलोक तलक वो
कितनी अद्‌भुत काया है।

मेरा इसमें कुछ नहीं यह
सब ईश्वर की माया है।

हर-इक जाएगा दुनिया से
जो दुनिया में आया है।

लगती तो यह छोटी सी पर
बात बड़ी और सैयानी।

बोल नहीं---

हूँ मैं पूर्वज तुम सबका पर
मेरा कहा कहाँ माना।

क़ुदरत छेड़ के क्या होता है
तुमने ये क्यों न जाना।

याद करोगे तब मुझको जब
याद में आएगी नानी।

बोल--

मरा हमेशा खामोशी संग
तुम संग भीड़ बहुत भारी।

तोड़ा हर बंधन झटक कर
रिश्ता हो या फिर यारी।

मुक्ति के पीछे भागे तुम
यथा-स्थिति मुझे प्यारी।

वफा की रोटी खाई हरदम
तुमको भाए गद्दारी।

कर-कर इतना पाप है क्योंकर
जरा नहीं तुमको ग्लानि।

बोल नहीं---

लावारिस बन बीच सड़क पर
तन मेरा ठिठुरता है।

खुदगर्जी इन्सान की यारो
कैसी मन-निष्ठुरता है।

कपट भरे विवहार में देखो
न इसका कोई सानी।

बोल नहीं---

रोटी और मकान बहुत है
कपड़े की ख्वाइश नहीं।

शर्म बसी है खून में अपने
अंगों की नुमाइश नहीं।

बेहूदे पहनावे में तुम
बनते हो बड़े मानी।

बोल नहीं----

नशे का कारोबार करूँ न
खेल-मिलावट न खेलूँ।

सारे पुट्ठे काम करो तुम
मार-कूट पर मैं झेलूँ।

क्या जवाब दोगे तुम ऊपर
रे पापी रे अभिमानी।

बोल नहीं----

पूरा अपना जोर लगाता
जितना मेरे अंदर हो।

मेरा जलवा चहुँ-दिशा में
नभ हो या समंदर हो।

बरबादी तक ले जाने की
क्यों तुमने खुद को ठानी।

बोल नहीं सकता—

खून से सींचा रे तुझको फिर
भूल गया कैसे मुझको।

रब मंदर मेरे अंदर फिर
भी न माने क्यों मुझको।

लीला मेरी तुझे लगे इक
हरकत उल्टी बचकानी।

बोल नहीं---

कुदरत ने हम दोनों को जब
अच्छा पाठ पढ़ाया था।

भाई बड़ा बना करके तब
आगे तुझे बढ़ाया था।

राह मेरी तू क्या सुलझाए
खुद की जिससे अनजानी।

बोल नहीं--

बेशक लक्ष्य नहीं तेरा पर
है मुंहबोला वह मेरा।

मकड़जाल बुन बैठा तू जो
उसने ही तुझको घेरा।

याद दिलाऊँ लक्ष्य तुम्हारा
बिन मस्तक अरु बिन बानी।

बोल नहीं---

प्यार की भाषा ही समझूँ मैं
प्यार की भाषा समझाऊँ।

प्यार ही जन्नत प्यार ही ईश्वर
प्यार पे बलिहारी जाऊँ।

ढाई आखर प्रेम का पढ़ ले
जो कोई वो ही ज्ञानी।

बोल नहीं--

@bhishmsharma95

यह युद्ध है यह युद्ध है

यह युद्ध है यह युद्ध है।

न कोई यहाँ पे गाँधी है
न कोई यहाँ पे बुद्ध है।

यह युद्ध है यह युद्ध है।

वीरपने की ऐसी होड़ कि
हिंसा-व्यूह का दिखे न तोड़।

कोई तोप चलाता है तो
कोई देता है बम फोड़।

रुधिर-सिक्त शापित डगरी पर
दया सब्र रूपी न मोड़।

लड़े सांड़ पर मसले घास
जिस पर देते उनको छोड़।

मान पलायन-कायरता न
युद्ध-नीति में इसका जोड़।

असली वीर विरल जगती में
हर इक न होता रणछोड़।

नीति-मार्ग अवरुद्ध है।
यह युद्ध है----

गलती को दुत्कारे फिर भी
नकल उसी की करते हैं।

हमलावर को अँगुली कर के
खुद भी हमला करते हैं।

चिंगारी वर्षों से दबी जो
उसको हवा लगाते हैं।

क्रोध का कारण और ही होता
और को मार भगाते हैं।

खून बहा कर नदियां भर-भर
भी हर योद्धा क्रुद्ध है।

यह युद्ध है---

बढ़त के दावे हर इक करता
आम आदमी है पर मरता।

लाभ उठाए और ही कोई
कीमत उसकी और ही भरता।

जीत का तमगा लाख दिखे पर
न स्वर्णिम न शुद्ध है।

यह युद्ध है----

धर्म का चोला हैं पहनाते
युद्ध को कोमलता से सजाते।

दिलों के महलों को ठुकराकर
पत्थर पर झंडा फहराते।

कैसा छद्म-युद्ध है यह
कैसा धर्म-युद्ध है।

यह युद्ध है---

ज्वाला में सब जलता है और
पानी में सब गलता है।

पेड़ हो चाहे या हो तिनका
नाश न इनका टलता है।

रणभूमि में एकबराबर
मूर्ख है या प्र-बुद्ध है।

यह युद्ध है----

राजा वीर बहुत होता था
रण को कंधे पर ढोता था।

जान बचाने की खातिर वो
गिरि-बंकर में न सोता था।

आज तो प्रजा-खोरों का दिल
राज-धर्म-विरुद्ध है।

यह युद्ध है---

आग बुझाने जाना था जब
आग लगाई क्यों तूने।

आग तपिश के स्वाद की खातिर
लेता जला तू कुछ धूने।

बात ही करनी थी जब आखिर
बात बिगाड़ी क्यों तूने।

सोच सुहाग उजड़ते क्योंकर
क्यों होते आँचल सूने।

परमाणु की शक्ति के संग
प्रलयंकर महा-युद्ध है।

यह युद्ध है--

खून-पसीने की जो कमाई
वो दिखती अब धरा-शायी।

मुक्ति मिलती जिस शक्ति से
क्यों पत्थर में थी वो गंवाई।

बुद्धि नहीं कुबुद्ध है।
यह युद्ध है---

~@bhishmsharma95

अब तो पुष्प खिलने दो, अब तो सूरज उगने दो~कुंडलिनी रूपकात्मक आध्यात्मिक कविता

अब तो पुष्प खिलने दो
अब तो सूरज उगने दो।

भौंरा प्यासा घूम रहा
हाथी पगला झूम रहा।

पक्षी दाना चौंच में लेके
मुँह बच्चे का चूम रहा।

उठ अंगड़ाई भरभर के अब
नन्हें को भी जगने दो।

अब तो पुष्प--

युगों युगों तक घुटन में जीता
बंद कली बन रहता था।

अपना असली रूप न पाकर
पवनवेग सँग बहता था।

मिट्टी खाद भरे पानी सँग
अब तो शक्ति जगने दो।

अब तो पुष्प ---

लाखों बार उगा था पाकर
उपजाऊ मिट्टी काया।

कंटीले झाड़ों ने रोका या
पेड़ों ने बन छाया।

खिलते खिलते तोड़ ले गया
जिसके भी मन को भाया।

हाथी जैसे अभिमानी ने
बहुत दफा तोड़ा खाया।

अब तो इसको बेझिझकी से
अपनी मंजिल भजने दो।

अब तो पुष्प--

अबकी बार न खिल पाया तो
देर बहुत हो जाएगी।

मानव के हठधर्म से धरती
न जीवन दे पाएगी।

करो या मरो भाव से इसको
अपने काम में लगने दो।

अब तो पुष्प --

मौका मिला अगर फिर भी तो
युगों का होगा इंत-जार।

धीमी गति बहुत खिलने की
एक नहीं पंखुड़ी हजार।

प्रतिस्पर्धा भी बहुत है क्योंकि
पूरी सृष्टि खुला बजार।

बीज असीमित पुष्प असीमित
चढ़ते मंदिर और मजार।

पाखण्डों ढोंगों से इसको
सच की ओर भगने दो।

अब तो पुष्प खिलने दो
अब तो सूरज उगने दो।

~@bhishmsharma95

चूल्हा कैसे जलेगा, जीवन कैसे चलेगा।

चूल्हा कैसे जलेगा
जीवन कैसे चलेगा।

आज का दिन तो चल पड़ा पर
कल कैसे दिन ढलेगा।
चूल्हा कैसे जलेगा।

बचपन बीता खेलकूद में
सोया भरी जवानी में।

सोचा उमर कटेगी यूँ ही
अपनी ही मनमानी में।

नहीं विचारा पल भर को भी
वक़्त भी ऐसे छलेगा।
चूल्हा कैसे ~~

सोचा था कुछ काम करेंगे
खून पसीना एक करेंगे।

पढ़ लिख न पाए तो भी तो
भूखे थोड़ा ही मरेंगे।

सोचा नहीं हमारे हक से
पेट मशीन का पलेगा।
चूल्हा कैसे ~~

नायाबी न थमी है, पर
काम की फिर भी कमी है।

काम वहाँ पर नहीं है मिलता
जहाँ गृहस्थी जमी है।

गृहसुख त्याग के इस मानुष का
पैसा कैसे फलेगा।
चूल्हा कैसे~~

काश कि ऐसा दिन होता सब
को पैसा मुमकिन होता।

उसके ऊपर वो पाता जो
जितना भी दाना बोता।

झगड़े मिटते इससे क्यों नर
इक-दूजे संग खलेगा।
चूल्हा कैसे ~~

काम तो है आ~राम को
योगा के विश्राम को।~2

इसके पीछे उमर कट गई
आखिर कब ये फलेगा।
चूल्हा कैसे ~~

@bhishmsharma95

है गांव शहर में भी बसता, तन से न सही मन से मानें

हम गाँवों के गबरू हैं तुम सा
शहर में जीना क्या जानें।

है गांव शहर में भी बसता तन
से न सही मन से मानें।

बस सूखी रोटी खाई है तुम सा शहद
में पला नहीं।

हमने न झेली न टाली ऐसी भी
कोई बला नहीं।

हमने न पेड़ से खाया हो फल
ऐसा कोई फला नहीं।

तब तक सिर को दे मारा है जब
तलक पहाड़ भी टला नहीं।

सिर मत्थापच्ची करते जब तुम
थे भरते लंबी तानें।
हम गाँवों -----

दिल-जान से बात हमेशा की तुम
सी घुटन में जिया नहीं।

है प्यार बाँट कर पाया भी नफ़रत
का प्याला पिया नहीं।

इक काम जगत में नहीं कोई भी
हमने है जो किया नहीं।

है मजा नहीं ऐसा कोई भी
हमने हो जो लिया नहीं।

फिर अन्न-भरे खेतों में खड़ के
दाना-दाना क्यों छानें।
हम गाँवों के ----

है इज्जत की परवाह नहीं
बेइज्जत हो कर पले बढ़े।

अपनों की खातिर अपने सर
सबके तो ही इल्जाम मढ़े।

कागज की दुनिया में खोकर भी
वेद-पुराण बहुत ही पढ़े।

हैं असली जग में भी इतरा कर
खूब तपे और खूब कढ़े।

बस बीज को बोते जाना था कि
स्वर्ण कलश मिलते न गढ़े

इस सोच के ही बलबूते हम तो
हर पल निशदिन आगे बढ़े।

फिर छोटा मकसद ठुकरा कर हम
लक्ष्य बड़ा क्यों न ठानें।
हम गाँवों के -----

जो शहर न होते फिर अपनी हम
काबिलियत को न पाते।

रहते अगर न वहाँ तो क्या है
घुटन पता कैसे पाते।

न लोकतंत्र से जीते गर ये
नियम-व्यवस्था न ढाते।

फिर बेर फली तरु न भाते गर
भेल पकौड़े न खाते।

हम साइलेंट जोन में न बसते तो
घाट मुरलिया न गाते।

हम रिमझिम स्नान भी न करते गर
नगर में न तनते छाते।

है रात के बाद सुबह आती तम से ही
लौ दमखम पाती।

है सुखदुख का चरखा चलता वह
न देखे जाति-पाति।

फिर अहम को अपने छोड़ के हम यह
सत्य नियम क्यों न मानें।
हम गाँवों ----

है ढोल-गंवार यही कहते बस
तुलसी ताड़न-अधिकारी।

है अन्न उगाता जो निशदिन वो
कैसे है कम अधि-कारी।

जो दुनिया की खातिर जाता हो
खेतों पर ही बलिहारी।

वो कम कैसे सबसे बढ़कर वो
तो मस्ती में अविकारी।

फिर ऊंच-नीच ठुकरा क्यों न हम
इक ही अलख को पहचानें।
हम गाँवों ---

~@bhishmsharma95

नित जिनको पक्षी गाते

वो गाने न दिखते हमको
नित जिनको पक्षी गाते।

सुंदर झील किनारे चींचीं
किसको नहीं सुहाती है।
मीठी पवन की वो लहरी जो
मन के भाव बहाती है।।
सारस बन उड़ जाए ऊपर
निखिल जगत पर छा जाए।
मन का पंछी तोड़ के बंधन
मुक्त गगन ही हो जाए।।
गीत सुरीले बोल रसीले
हृदय-धरा से न जाते।
वो गाने न दिखते हमको
नित जिनको पक्षी गाते।।

चींचीं नहीं समझ आती पर
फिर भी गहरी बात करे।
बोली जो खग की समझे वो
कर्ण-शहद दो-गुना भरे।।
कागभाषी~ बड़े दुनिया में
असली अच्छा कोई कहे।
बहुते तो पंछी-बोली को
मुख अपना दे वही कहे।।
असली वक्ता असली पाठी
ढूंढे नहीं धरे जाते।
वो गाने न दिखते हमको
नित जिनको पक्षी गाते।।

पंछी जल पर बस जाते पंक्ति
बन कर पीते-खाते।
सुबह कहीं से आते हैं फिर
घर की ओर चले जाते।।
चींचीं-चकचक सिखा-सिखा कर
क्या है डूब तो क्या है तैर।
दर्पण सबको रोज दिखा कर

क्या है बंधन क्या है सैर।।
अनपढ़ जालम न समझे जो
हा-हा कर हैं भ~गाते।।
वो गाने न दिखते हमको
नित जिनको पक्षी गाते।

अपने पोत बढ़ाते लोग
अपने गोत बढ़ाते लोग।
निकट से नाव लगे पर सबका
बड़ा है जगजलधि का रोग।।
हंस-मत्स्य बिन लटरं-पटरं
सरपट दौड़े पार करे।
मूरख भारी लश्कर के संग
उसमें डूबे और मरे।।
जीवनरक्षक नाव जो बनकर
मंझधारी को बचा पाते।
वो गाने न दिखते हमको
नित जिनको पक्षी गाते।।

कूकू-वेदपुराण छा गए
अद्भुत साउंड-रेकॉर्डर बन।
बिन बिजली बिन बाती के जो
युगों तलक करते छनछन।।
अंडे फूटे शास्त्रों के जब
गहरा हर्षोल्लास हुआ।
चींचीं बोली किलकारी से
छूमंतर जग-त्रास हुआ।।
वही लिख गए दुनिया को जो
लौट गए पाते-पाते।
वो गाने न दिखते हमको
नित जिनको पक्षी गाते।।

कागभुषुन्डी रुकते पल भर
ज्ञान चखा कर उड़ जाते।
भक्त जटायु राम-मिलन को
प्राण-बलि हैं दे जाते।
गरुड़ जटायु शुक-उल्लू खग

भाव सुमन

सब ज्ञानी माने जाते।
कुछ पुराण की रचना करते
कुछ सुर-वाहन बन जाते।।
कलियुग में तो बका~सुर ही
सत्कारे पूजे जाते।
वो गाने न दिखते हमको
नित जिनको पक्षी गाते।।

यह गाते~ वह गाते
वीणा संग आते-जाते।
दुनिया में झंकार मचा के
अजब जगत को तुर जाते।।
तुकाराम नानक रहीम हो
सब सुनने-में-ही आते।
आए थे जो धरा पे संतन
अब दिखते उड़ते जाते।।
गीत बहुत हैं लोकों में पर
पुतलों से ही-सुने जाते।
वो गाने न दिखते हमको
नित जिनको पक्षी गाते।

~@bhishmsharma95

जब घर मे गंगा बहती हो

और पे दृष्टि क्यों डालूं, जब आखों में तुम रहती हो !
जल घाट घाट का क्यों पीऊं, जब घर मे गंगा बहती हो !!

सांस मेरी थम जाती है, जब आँख से ओझल होती हो !
दिल क्यों न मेरा झूम उठे, तुम धड़कन में जो रहती हो!!

~हेमंत

क्यों जाए कैलाश कोई, और क्यों जाए काबा

आँखें उसकी झील सी गहरी, मंद मंद मुस्कान !
जुल्फें जैसे काली रात, और चेहरा जैसे चाँद !!

गालों की लाली जैसे , उगते सूरज की आभा !
क्यों जाए कैलाश कोई, और क्यों जाए काबा !!

उतरी थी इस धरा पे कोई, देवलोक की शान !
छीन के दिल का चैन सकूं, हो गयी अंतर्ध्यान !!

🙏हेमंत🙏

जिसकी कृपा से मिला जग जीवन

निर्मल जल-पूरित सरवर, विविध लता वल्लरित तरुवर !!
मधुर निनाद निनादित प्रतिपल, झर झर झरता निर्झर अविरल !!

सरिता की धारा भी चंचल, मधुर स्वरों में कूजित कोकिल !!
शशि भासित रजनी उज्ज्वल, हिम गिरिवर अति नवल धवल !!

विविध पुष्प से पुष्पित उपवन, नैसर्गिक छटा अति मनभावन !!
तन मन करूँ उस पर अर्पण, जिसकी कृपा से मिला जग जीवन !!

प्यारी मधुशाला

लोक डाउन में व्यथित रहा, जो भी था पीने वाला !
कैसे दिल की प्यास बुझेगी, बंद रहेगी मधुशाला !!

जैसे ही अनलॉक हुआ, गद् गद था पीनेवाला !
बन्द रहे चाहे दुनिया, पर खुल जाए बस मधुशाला !!

हाथ जोड़ विनती करे, अर्पित करूं नोटों की माला !
चिरकाल की प्यास बुझे, कर दे कृपा ऊपरवाला !!

मंदिर जैसे लगे अहाता, भगवन सा ठेकेवाला !
प्रभु नैया अब पार लगाओ, जल्दी खोलो मधुशाला !!

कदम चूमे ठेकेवाले के, अर्पित की पुष्पों की माला !
दर्शन पाया बोतल का, हुआ भावुक पीनेवाला !!

चुमे चाटे बोतल को, लगा कर सीने से हाला !
अश्रुधार नयनो में ले कर, रुदन करे पीने वाला !!

पहली बून्द हलक में उतरी, मचल गया पीनेवाला !
पूरी बोतल गटक गया, शांत हुई उर की ज्वाला !!

कोरोना का खौफ मिटा, झूमे नाचे पीनेवाला!
औषध कोई और न हो, जब प्राप्त हुई प्यारी हाला !!

मंदिर मस्जिद और गुरुद्वारे, खेल कूद व विद्यालय !
बन्द रहे सारे के सारे, बस खुली रही थी मधुशाला !!

आशीर्वाद दे बारम्बार, हेमन्त हुआ जब मतवाला !
जुग जुग जीवे ठेकेवाला, जय हो तेरी मधुशाला !!

🙏हेमंत🙏

दूर का ढोल सुहाना है

दूर जो हमसे होता है, प्यार उसी पर आता है !
पास हमारे होता है, वो फूटी आँख न भाता है !!

पास हमारे साज नए नित, दूर का ढोल सुहाना है !
संगीत हमारे भीतर है, पर बाहर का शोर ही भाता है !!

घर मे है जो मां की ममता, और पिता का प्यार !
कर के उसको दरकिनार, मोबाइल में मगज़ खपाता है !!

अपने रिश्ते नाते तो, लगते है बेकार !
दूर देश का अंजाना, फेस बुक पर लुभाता है !!

संभल सके तो संभल हेमंत, अभी भी कुछ तो मौका है !
अपने ही हाथों क्यों तू, अपनी नैया डुबोता है !!

🙏हेमंत🙏

जीवन की रीत

सूरज ने खोले नयन, भोर ने ली अंगड़ाई !!
भवरों ने गुंजार किया, पुष्प कली मुस्काई !!

विहंग चले उन्मुक्त गगन को, सुषुप्त जगत भी जाग उठा !!
हरित हरित तृण पत्तियों पर, स्वर्णिम शबनम चमक उठा !!

सूर्य देव फिर तीव्र अंशु से, व्याकुल कर देते तन मन !!
अलसाये नयनो से , निष्क्रिय सा हो जाता जीवन !!

शनै शनै फिर उमड़ घुमड़, छा जाते बादल नभ पर !!
वर्षा की रिमझिम फुहार, शीतलता बरसाती सब पर!!

विकराल रूप फिर बारिश का, हाहाकार हुआ जग में !
बिखर गया मन का सकूं, अंधकार सा छाया जग में !!

सविता का फिर खुला नयन, हर्षित हुआ मानव का मन !!
आशा की एक किरण जगी, जीने की एक लग्न लगी !!

ऐसे ही मौसम आते, हर्षित व व्याकुल कर जाते !!
मौसम की ये ही रीत, दे जाती जीवन की सीख !!

मनोबल न गिरने पाए, गति हमारी रुक न पाए !!
कष्टों पर पाओगे जीत, व्यथित न होना मेरे मीत !!

🙏हेमंत🙏

हँसी कम न हो

धन दौलत चाहे कम हो !
पर न कोई गम हो !!

भाव अपने जुड़े रहे !
दूर चाहे तुम हम हो !!

एक दूजे का हाथ थाम के !
सुख दुख में हम संग हो !!

नोक झोंक चलती रहे !
पर होटों पे हँसी कम न हो !!

लाख दुखाये दिल को कोई !
पर हेमंत को कोई रंज न हो !!

🙏हेमंत🙏

जाएँ तो आखिर जाएँ कहाँ

है कौन यहाँ, है कौन वहाँ
जाएं तो आखिर जाएं कहाँ।

है नीचे भीड़ बहुत भारी पर
ऊपर मंजिल खाली है।

हैं भीड़ में लोग बहुत सारे
कुछ सच्चे हैं कुछ जाली हैं।

मंजिल ऊपर तो लगे नरक सी
न दाना न पानी है।

निचली मंजिल की भांति न
उसमें अपनी मनमानी है।

है माल बहुत भेजा जाता पर
अंधा गहरा कूप वहाँ।

न यहाँ के ही न वहाँ के रह गए
पता नहीं खो गए कहाँ।

है कौन यहाँ, है कौन वहाँ
जाएं तो आखिर जाएं कहाँ।

नीचे पूरब वाले हैं पर
ऊपर पश्चिम (ही) बसता है।

है ऊपर बहुत महंगा सब कुछ
नीचे सब कुछ सस्ता है।

हैं रचे-पचे नीचे फिरते सब
ऊपर हालत खस्ता है।

बस अपनी अपनी डफली सबकी
अपना अपना बस्ता है।

हैं सारे ग्रह तारे सूने बस
धरती केवल एक जहाँ।

है कौन यहाँ, है कौन वहाँ
जाएं तो आखिर जाएं कहाँ।

अंधों का इक हाथी है हर
कोई (ही) उसका साथी है।

बहुते पकड़े हैं पूँछ तो कोई
सूंड पैर सिर-माथी है।

सब लड़ते रहते आपस में कह
मैं तो कहाँ, पर तू है कहाँ

है कौन यहाँ, है कौन वहाँ
जाएं तो आखिर जाएं कहाँ।

है कटता समय-किराया हरपल
संचित धन ही काम करे।

जा नई कमाई कोष में केवल
खर्च से वो रहती है परे।

है कैसा अजब वपार (व्यापार) है जिसका
तोड़ यहाँ न तोड़ वहाँ।

है कौन यहाँ, है कौन वहाँ
जाएं तो आखिर जाएँ कहाँ।

है नीचे रोक घुटन भारी पर
ऊपर शून्य हनेरा है।

ऊपर तो भूखे भी रहते पर
नीचे लंगर डेरा है।

है अंधा एक तो इक लंगड़ा
दोनों में कोई प्रीत नहीं।

ले हाथ जो थामे इकदूजे का
ऐसा कोई मीत नहीं।

है कैसी उल्टी रीत है कैसा
उल्टा मंजर जहाँ-तहाँ।

है कौन यहाँ, है कौन वहाँ
जाएं तो आखिर जाएँ कहाँ।

है बुद्धि तो धन है थोड़ा
पर धन है तो बुद्धि माड़ी।

है बुद्धि बिना जगत सूना
बिन चालक के जैसे गाड़ी।

बस अपने घर की छोड़ कथा हर
इक ही झांके यहाँ-वहाँ।

है कौन यहाँ, है कौन वहाँ
जाएँ तो आखिर जाएँ कहाँ।

आ~राम तो है सत्कार नहीं
सत्कार जो है आराम नहीं।

है पुष्प मगर वो सुगंध नहीं
है गंध अगर तो पुष्प नहीं।

इस मिश्रण की पड़ताल में मित्रो
भागें हम-तुम किधर कहाँ।

है कौन यहाँ, है कौन वहाँ
जाएँ तो आखिर जाएँ कहाँ।

है कर्म ही आगे ले जाता
यह कर्म ही पीछे को फ़ेंके।

है जोधा नहीँ कोई ऐसा जो
कर्म-तपिश को न सेंके।

न कोई यहाँ, न कोई वहां बस
कर्म ही केवल यहाँ-वहाँ।

है कौन यहाँ, है कौन वहाँ
जाएँ तो आखिर जाएँ कहाँ।

नाच

नाच नचाए ये कैसा
सब मुंह पैसा ही पैसा।

भरी दुपहरी गरमी के दिन,
ठेला लोग चलाते हैं।

किसम किसम के उद्योगों में,
अपनी देह जलाते हैं।।

कुछ जीते जी हासिल करते
कुछ इस पे मर जाते हैं।

भटकी आत्मा के जैसे वो,
कम ही शांति पाते हैं।।

अचरज-करतब क्यों ऐसा,
कहीं नहीं देखा जैसा।

नाच नचाए ये कैसा,
सब मुंह पैसा ही पैसा।।

डाकू-चोर बनाए कुछ को,
शातिर कुछ को गजब का।

कुछ से हमला युद्ध कराए,
आम-जैसा या अजब का।।

मानवता की बलि चढ़ा कर,
पूजा इसकी करते हैं।

परमेश्वर की पदवी देकर,
रह-रह इससे डरते हैं।।

क्या है नायक क्या खलनायक,
कोई न इसके जैसा।

नाच नचाए ये कैसा,
सब मुंह पैसा ही पैसा।।

पैसे से पैसा आता बिन,
पैसे ये आए कैसे।

भेड़ अकेले न रह ढूंढे,
झुंडों को अपने जैसे।।

कुछ छोटे रह जाते हैं कुछ,
सागर जैसे बन जाते।

बुद्धि जितनी ताकत जितनी,
उतने ही बढ़-चढ़ जाते।।

कुछ अपने रोगों से सबको,
रोग-युक्त कर देते हैं।

संग-अपने अपने झुंडों को,
श्वास-मुक्त कर देते हैं।।

कोई आम खिलाड़ी है न,
धावक ही ऐसा-वैसा।

नाच नचाए ये कैसा,
सब मुंह पैसा ही पैसा।।

अपनी प्राप्ति करवाने को,
धरम के काम कराता है।

टेढ़ी चाल से चलकर हरदम,
परमेश्वर तक जाता है।।

जीवन के शतरंज में इसको,
जो कोई भी जान गया।

तय है जीत उसी की हरदम,
भीषम इसको मान गया।।

न अपना न पर कोई भी,
इसका 'जैसे को तैसा'।

नाच नचाए ये कैसा,
सब मुंह पैसा ही पैसा।।

पाते कर-भोगी इनसाफ,
करदाता रह जाते हैं।

भेड़ की न सुन ऊन पे ही नित,
दावे ठोके जाते हैं।।

नाचो-गाओ मौज मनाओ,
'गूंगे का गुड़' ये कैसा।

नाच नचाए ये कैसा,
सब मुंह पैसा ही पैसा।।

बाबा बाबा कहते हैं खुद, वीआईपी बन रहते हैं।

बाबा गर अच्छा होता तो,
चलते उसके कदमों पर।

छोड़ के माया मोह जगत का,
पिंड अपना खुद अर्पण कर।

छोड़ के घर छूटा करता तो,
स्मृति-रोगी बाबे होते।

भांग-नशे में डूबे रहकर,
भंगड़ भी पूजित होते।

माना बुरा पकड़ना है पर,
छोड़ना भी तो बात बुरी।

क्यों न निकट में रहकर भी हम,
सबसे रखें उचित दूरी।

दोनों का संतुलित मिश्रण ही,
असली दुनिया असली त्याग।

दोनों से दोनों मिल जाते,
असली प्रेम और विराग।

जा-जा-जा-जा कहते हैं खुद,
दुनिया में आ रहते हैं।

बाबा-बाबा कहते हैं खुद,
वीआईपी बन रहते हैं।

जगत-त्याग से शक्ति मिलती,
बात किसी से छिपी नहीं।

सिर का बोझ हटा लेने से,
राहत किसको मिली नहीं?

खाली सिर भी भार लगा जब,
पुनः बोझ को रख लेते।

बाबा बन के थक जाने पर,
पुनः गृहस्थ परख लेते।

खाली सिर की शक्ति से,
सोना या चांदी पा लेता।

बाबा कोई पूर्ण तो कोई,
उसके पथ को पा लेता।

कोई भांग-चरस में रहकर,
चिलम लगाता है भर भर।

दुनिया में देखा जाता,
खाली दिमाग शैतान का घर।

स्थायी कोई स्थिति नहीं है,
दुनिया हो या मठ-मंदिर।

पुनः जगत में आना पड़ता,
खिले ना पुष्प अगर अंदर।

आईआईटी हो या आईआईएम,
नियम हमेशा रहते हैं।

बाबा-बाबा कहते हैं खुद,
वीआईपी बन रहते हैं।

दुनिया हो या हो आनन,
चक्र हमेशा चलता है।

सबको हर जीवन-हालत में,
हर इक मौका मिलता है।

मौका चूके जो दुनिया में,
वह वन में कैसे पाए।

सुविधा में न जा पाए जो,
दुविधा में कैसे जाए।

उस तक जाना बात दूर की,
इस तक भी कैसे जाए।

बिन शक्ति न होता कुछ भी,
वन में ये कैसे आए।

हारे हुऎ खिलाड़ी अक्सर,
पिच को दोषी कहते हैं।

बाबा-बाबा कहते हैं खुद,
वीआईपी बन रहते हैं।

~@bhishmsharma95

it's 2k 22 new year

Keep the smile, leave the tear;
Think of joy, forget the fear.

Hold the laugh, leave the pain;
Be joyous b coz it's 2k 22 new year.

"Very very Happy New year to all my friends in advance."

O My mountain king Karol

you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol.

Whenever wake up in the morning
you're the only smiling being.
Whenever wake up in the morning
you're the only smiling being.
Hooding up sun-lamp on your head
lighting up pretty world with red.
Holding up sun-lamp on your head
lighting up pretty world with red.
Offered the water for the sun
Offered the water for the sun
you took bath with sun my dad.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol.

Whenever tired of big work load
lift up my big head off road.
Whenever tired of big work load

lift up my big head off road.
Seeing you steady 'n untired
I can't stop working on board.
Seeing you steady 'n untired
I can't stop working on board.
Holy spring of karmyoga
Holy spring of karmyoga
rush-flowing from you my lord.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol.

All the relatids have gone changed
whole world too has been estranged.
All the relatids have gone changed
whole world too has been estranged.
Screened the whole circle of friends
time enslaved them in his hands.
Screened the whole circle of friends
time enslaved them in his hands.
Happy to have a friend like you
Happy to have a friend like you
mind-sweet in the form of thou.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.

O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol.

Hold up seat at top abodes
you're the deity of all gods.
Hold up seat at top abodes
you'r the deity of all gods.
Rise up from the muladhar root
thrilled on the sahasrar nodes.
Rise up from the muladhar root
thrilled on the sahasrar nodes.
All the gods together with you
All the gods together with you
made just cute one looks like thou.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol.

Hairy herbs are inside thou
snake peacock 'n human crow.
Hairy herbs are inside thou
snake peacock 'n human crow.
Ganges streams and Water-fall
third eye the grue-some pit-fall .
Ganges streams and Water-fall
third eye the grue-some pit-fall.

Pretty look has crown of moon
draws always this my mind soon.
Pretty look has crown of moon
draws always this my mind soon.
Sub-mountain up to the base

Nandi bull being ready for race.
Sub-mountain up to the base
Nandi bull being ready for race.

Lightening looks Gaura on you
thundering glistening beats damru.
Lightening looks Gaura on you
thundering glistening beats damru.
Thys terrain with thunder-storms
looks Natarajan dancing norms.
Thys terrain with thunder-storms
looks Natarajan dancing norms.

Tiger skin cloth cloud flower
mist being as pure pyre shower.
Tiger skin cloth cloud flower
mist being as pure pyre flower.
Ganpat god rained with reasons
tridents mixture of seasons.
Ganpat god rained with reasons
tridents mixture of seasons.

Thys mind-pleasing look with norm
Thys mind-pleasing look with norm
matches just one that's Shiva form.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
When this world rejected
you happily adopted.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol
you are so wonderful soul.
O my Mountain king Karol.
~ Hridayesh Bal🙏🙏@bhishmsharma95

कुछ लेखक अनुमोदित साहित्यिक पुस्तकें-

1) Love story of a Yogi- what Patanjali says
2) Kundalini demystified- what Premyogi vajra says
3) कुण्डलिनी विज्ञान- एक आध्यात्मिक मनोविज्ञान~ bhag 1,2,3,4
4) The art of self publishing and website creation
5) स्वयंप्रकाशन व वैबसाईट निर्माण की कला
6) कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है
7) बहुतकनीकी जैविक खेती एवं वर्षाजल संग्रहण के मूलभूत आधारस्तम्भ- एक खुशहाल एवं विकासशील गाँव की कहानी, एक पर्यावरणप्रेमी योगी की जुबानी
8) ई-रीडर पर मेरी कुण्डलिनी वैबसाईट
9) My kundalini website on e-reader
10) शरीरविज्ञान दर्शन- एक आधुनिक कुण्डलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा)
11) श्रीकृष्णाज्ञाभिनन्दनम
12) सोलन की सर्वहित साधना
13) योगोपनिषदों में राजयोग
14) क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव
15) देवभूमि सोलन
16) मौलिक व्यक्तित्व के प्रेरक सूत्र
17) बघाटेश्वरी माँ शूलिनी
18) म्हारा बघाट
19) भाव सुमन: एक आधुनिक काव्यसुधा सरस
20) Kundalini science~a spiritual psychology- parts 1,2,3,4

इन उपरोक्त पुस्तकों का वर्णन एमाजोन, ऑथर सेन्ट्रल, ऑथर पेज, प्रेमयोगी वज्र पर उपलब्ध है। इन पुस्तकों का वर्णन उनकी निजी वैबसाईट https://demystifyingkundalini.com/shop/ के वैबपेज "शॉप (लाईब्रेरी)" पर भी उपलब्ध है। साप्ताहिक रूप से नई पोस्ट (विशेषतः कुण्डलिनी से सम्बंधित) प्राप्त करने और नियमित संपर्क में बने रहने के लिए कृपया इस वैबसाईट,"https://demystifyingkundalini.com/" को निःशुल्क रूप में फोलो करें/इसकी सदस्यता लें।

सर्वत्रं शुभमस्तु